# हे! प्रिय वत्सों - अब दिव्यता का आह्वान करो



- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई,माउंट आबू

**याद करो उस समय को जब ये घड़ियां बीत जाएंगी...भगवान का नूतन युग रचने का कार्य सम्पन्न हो जाएगा... कोई विजयी रत्न बन जाएंगे और कोई अष्ट रत्न... कोई आत्मा सर्व रसों से स्वयं को भर लेंगे, किसी की तिजोरियां सब खज़ानों से भर जाएंगी तो कोई हाथ मलते ही रह जाएंगे कि ओह... हमने भाग्य निर्माण के इस काल में क्या-क्या किया...!!!**

इन कोमल कलियों का बलिदान देखकर किसका मन प्रेरणा व उत्साह से नहीं भरेगा। जो फूल अभी खिले भी नहीं है, जिनमें अभी सुगन्ध भरनी बाकी है, वे चले है इस विरान में पुष्प उगाने, वे चले हैं इस दुर्गन्ध भरी वसुन्धरा पर पवित्रता की सरिता बहाने... क्यों न गौरव होगा, उनके जन्म देने वालों को भी और क्यों न गर्व होगा उसको भी, जिनका इशारा मिलते ही इन्होंने ये बलिदानी कदम उठाया। ये कलियां महकते पुष्प बन जाएं, ये कलियां विश्व की प्रेरक बन जाएं, ये कलियां निर्बलों व निर्धनों का सहारा बन जाएं... इनको बस ऐसी ही शुभ-भावनाओं की आवश्यकता है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में हज़ारों आत्माएं अपने जीवन रूपी पुष्प को शिव पर अर्पित कर चुकी है। ये महान विभूतियां कलियुग में रहते हुए भी कलियुग से बहुत दूर निकल आई हैं और पुनः लौटने का किसी का कोई भी इरादा नहीं है। तो क्यों न इस जीवन को दिव्यता से भर दें ताकि संसार हममें ही प्रभु का दर्शन कर सके। तो हमें अन्तर्मुखी होकर देखना है कि ये ईश्वरीय मौजों का काल कैसे बीत रहा है। कहीं ये अनमोल घड़ियां यूं ही तो नहीं बीत रहीं... कहीं ये वरदानी समय संघर्षों में ही तो नहीं बीत रहा... कहीं ये अविनाशी कमाई की घड़ियां हमारे हाथ से खाली ही तो नहीं जा रहीं... ऐसा तो नहीं कि कहीं हमें एहसास भी न हो और ये सुनहरा काल यूं ही बीत जाए।

## मनुष्य की सबसे प्यारी वस्तु ये जीवन है

मनुष्य की सबसे प्यारी वस्तु ये जीवन है, जबकि इसे हो सेवाओं के लिए स्वाहा कर दिया, फिर भला इस जीवन को दिव्य बनाने के लिए हम एक बार दिल से मेहनत क्यों न करें! जबकि भगवान ने हमारा सभी बोझ भी हर लिया, हमें अपनी छत्रछाया में ले लिया, अपने प्यार में समा लिया और अपना उत्तराधिकारी बना लिया तो देरी किस बात की! तो आओ हम सभी मिलकर संकल्प करें कि जब तक अपने लक्ष्य को नहीं पा लेंगे, तब तक तपस्वी जीवन व्यतीत करेंगे, वैभवों से दूर रहेंगे और मुड़कर कभी भी पीछे नहीं देखेंगे। जीवन का बलिदान करने वालों, ज़रा याद करो उस अतीत को जब तुमने अपनी इस अमूल्य निधि-'जीवन' को ईश्वर को बलिदान करने का संकल्प किया था। क्या-क्या उमंगें थीं तुम्हारे दिल में? क्या कुछ करने के साहस के साथ कदम आगे बढ़ाए थे? जीवन के किस लक्ष्य को पाने के लिए निःसंकोच होकर और विघ्नों को लात मारकर यह कुर्बानी की थी?

## योगयुक्त होकर विचार करें-



योगयुक्त होकर विचार करो कि जिस पर तुमने स्वयं को बलिदान किया है, उसने प्रत्यक्ष रूप में तुम्हें क्या दिया है? उसने अपनी असीम शक्तियों को तुमसे जोड़ दिया है... उसने तुम्हें अपनी शीतल छाया में विश्राम दिया है, तुम्हें अपने नयनों का नूर बना लिया है... तुम पर उसकी नज़र है और तुम्हें मालूम है कि वह तुमसे क्या चाहता है?

### उसकी तुमसे श्रेष्ठ कामना है कि-

- ये मेरे चेतन चिराग जग को रोशन करें।
- ये मेरे नयनों के नूर जग के नूर बनें।
- मेरे ये पावन वत्स इस धरा पर उसी तरह चमकें जैसे नभ में सूर्य और चंद्रमा चमकते हैं।
- मेरी इन बलिदानी भुजाओं में तेज हो, दिव्यता हो, प्रकाश हो ताकि मेरे भक्त मेरी छवि इस धरा पर देख सकें।
- मेरे ये लाल, रूहों के सहारे बनें, मानव की डगमगाती कश्ती के किनारे बनें। मेरे ये वत्स विश्व की अमूल्य निधि बनें।
- मेरे ये वत्स जग की शोभा बनें, रोतों के लिए मुस्कान बनें, चिंताओं के लिए चिंगारी बनें, अबलाओं की शक्ति बनें और इस वीरान विश्व में हरियाली लायें।
- मेरे ये वत्स अति शक्तिशाली, अचल-अडोल बनें, विघ्नों को ललकारने वाले बनें और माया के साम्राज्य को समाप्त कर दें।

## अपने साहस और आत्म विश्वास को भूलो नहीं

अपने साहस और आत्म विश्वासों को भूलो नहीं। तुम्हारा ये साहस तुम्हारा सहायक बनेगा। समस्याएं और विघ्न तुम्हारे साहस व आत्मविश्वास को समाप्त न करें। जहाँ साहस व आत्मविश्वास है, वहाँ कठिनाई व समस्याएं स्वतः ही आत्म समर्पण कर देती है। याद करो उस समय को जब ये घड़ियां बीत जाएंगी... भगवान का नूतन युग रचने का कार्य सम्पन्न हो जाएगा... कोई विजयी रत्न बन जाएंगे और कोई अष्ट रत्न... कोई आत्मा सर्व रसों से स्वयं को भर लेंगे, किसी की तिजोरियां सब खज़ानों से भर जाएंगी तो कोई हाथ मलते ही रह जाएंगे कि ओह... हमने भाग्य निर्माण के इस काल में क्या-क्या किया। हम तेरे-मेरे की माला में ही उलझे रहे... हमने मान-शान के पीछे ही जीवन लगा दिया... हम न सुख दे सके, न सुख ले सके। परन्तु तब समय बीत चुका होगा और हम तब अपने को उन मनुष्यों से अच्छा नहीं समझेंगे जिन्होंने इस धरा पर आये हुए प्रभु को नहीं पहचाना।

तो हे जग को सुगन्धित करने वाले चेतन पुष्पों, बाबा की कामनाओं को पूर्ण करो... सबके प्रेरक बन जाओ... जो लोग तुममें विश्वास नहीं करते, उन्हें भी अपने दिव्य विवेक का चमत्कार दिखाओ। जो तुम्हें रूखी दृष्टि देते है, उन्हें तुम सुख भरी दृष्टि के महत्व का आभास कराओ। जो तुम्हें कमज़ोर समझते है, जो तुममें संशय करते है, उन्हें तुम सफलता की चैतन्य प्रतिमा बनकर दिखाओ। तुम अपने कदम इतनी तेज़ी से आगे बढ़ाओ कि वर्षों से चलने वाले यात्री पीछे रह जायें और उन्हें भी तीव्रगति से बढ़ने का उमंग प्राप्त हो।

मनाली-हि.प्र.। माउंटेनियरिंग इंस्टीट्यूट में 'द आर्ट ऑफ पॉज़िटिव थिंकिंग' कार्यक्रम के पश्चात् डायरेक्टर अविनाश नेगी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण,पानीपत। साथ हैं ब्र.कु. शोभा, ब्र.कु. साधना, ब्र.कु. सोनिका,पानीपत तथा अन्य।



अररिया-बिहार। एसएसबी कैंप में एसएसबी बटालियन 52 के जवानों के लिए 'कर्म, योग एवं मुस्कान के लिए मेडिटेशन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए प्रवक्ता ब्र.कु. रोशनी। कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ प्रशासक प्रभाग के कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. हरीश, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. सोनाली, एसएसबी बटालियन 52 के कमांडेंट अधिकारी महेन्द्र प्रताप सिंह, बैंक कर्मचारी संजय गुप्ता तथा अन्य अतिथियों की उपस्थिति रही।

## अव्यक्त मुरली 31-12-2002 (पहेली-24)2024 -25



### ऊपर से नीचे

1. ..... का अर्थ ही है जैसे ब्रह्मा बाप ने जो कहा वह किया है, जो सोचा वह तुरंत दान महापुण्य समान किया।(4)
2. बापदादा यही चाहते हैं कि जहाँ से आदि हुई, वहाँ ही प्रत्यक्षता होनी है। ..... आता है ना! ब्रह्मा बाप के देश के वासी हो तो देश वासियों से प्यार होता है।(3)
3. अगर ..... सफल करेंगे तो भविष्य में भी आधाकल्प का पूरा ..... राज्य अधिकारी बनेंगे।(3)
4. जैसे ब्रह्मा बाप ने जो कहा वह किया है, जो सोचा वह तुरंत दान महापुण्य समान किया। ऐसे ही महावीर ग्रुप का यह ..... है ना।(2)
5. बापदादा ने देखा है, कोई-कोई स्थान में हिम्मत कम दिलाने की ..... है। हिम्मत दिलाओ, हर कार्य में मन्सा में भी, वाचा में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी, कर्म में भी हिम्मत दिलाओ।(2)
8. जो भी आये चाहे सम्बन्ध में आवे, चाहे सम्पर्क में आवे लेकिन उनको कोई न कोई गुण या शक्ति की ..... दे देना।(2)
10. चारों ओर के बहुत मीठे, बहुत प्यारे बच्चों को पदम-पदम गुणा न्यू ईयर की मुबारक हो। यह जो घड़ी बीत गई, यह है ..... और बधाई की घड़ी।(3)
11. ..... के खज़ाने को भी सफल करो तो ..... का अर्थ है समझ, यहां इतने समझदार बन जाओ जो कोई मौजियों की ज़रूरत नहीं है।(2)
13. ऐसा प्लैन बनाओ जो कोई ने नहीं किया हो, वर्ग तो बहुत बने हुए है ना! तो आपका वर्ग सबसे ..... ले लेवे।(5)
14. आपके सिर पर भी ताज होगा और आपका पूरा अधिकार होगा। तो क्या करेंगे? नम्बरवन या नम्बरवार, क्या बनेंगे?(2)
15. जैसे दादियों के लिए कहते हो एक हैं, ऐसे आप दीदियां, दादे सब एकमत। इसका स्लोगन है-अभी-अभी ..... बनो, अभी-अभी मालिक बनो।(3)
16. बापदादा सदा कहते हैं कि यह माताएं जिस भी सेन्टर पर होंगी ना वह सेन्टर सदा फलीभूत होगा। चाहे कमाई नहीं लेकिन दिल बड़ी होती है, ..... बड़ी होती है।(3)
17. एक दिन आयेगा, बहुत जल्दी आयेगा जो सब कहेंगे कि हम सभी स्व-परिवर्तन करने वाले शक्ति, पाण्डव ..... हैं।(2)
18. पिता का पिता, पितामह।(2)
21. सब तिलकधारी बनकर आये है, जिन्होंने विशेष रिफ्रेशमेंट की है वह तिलक धारी खड़े रहो। अच्छी निशानी लगाई है। आत्मा ..... गई है ना?(3)
23. हवा, पवन, अनिल(2)

### बायें से दायें

1. बापदादा कहते हैं मुख मीठा तो कराना ही है लेकिन अपना मीठा मुखड़ा भी दिखाना है। सिर्फ मुख मीठा नहीं, मुखड़ा भी मीठा। इसी ..... जमा है ना! (4)
3. स्वांस ..... कर रहे हो तो 21 जन्म ही स्वस्थ रहेंगे। चलते-चलते किसकी हार्ट रूक जाती, किसकी नाड़ियां बन्द हो जाती, वह नहीं होगी।(3)
6. बापदादा कहते है कि हर एक बच्चा आगे-आगे ..... से मुबारक और दिल की दुआयें स्वीकार करें।(2)
7. यह ..... की ड्रिल जितना बार करेंगे उतना ही सहज योगी, सफल योगी बनेंगे।(2)
9. सूरज, दिवाकर, भास्कर(2)
12. आपके पास गुणों का खज़ाना कितना बड़ा है, शक्तियों का दान करने वाले मास्टर ..... बनो।(2)
13. अभी इस वर्ष ..... क्या करेंगे? अभी बापदादा ने जो काम दिया है, वह किया नहीं है।(4)
16. परमात्म मिलन की मौज़ सारे कल्प में संगमयुग पर मिलती है। हर दिन उत्सव है क्योंकि उमंग-उत्साह है कि अपने सर्व ..... बहिनों को परमात्मा पिता का बनायें।(2)
17. बापदादा सदा कहते है कि यह माताएं जिस भी ..... पर होंगी ना वह ..... सदा फलीभूत होगा।(3)
19. बापदादा तो ..... करते रहते हैं ना! तो मुश्किल योगी कौन-कौन बनता है! सहज योगी का यह मतलब नहीं है कि अलबेलेपन का पुरुषार्थ हो। श्रेष्ठ भी हो और सहज भी हो।(2)
20. ..... गाना तो सभी को आता है, बाप के गुणों का गीत गाना भी आता है और खुशी में ..... भी आता है।
22. सफलता का अधिकार आप ब्राह्मण आत्माओं के सिवाए और किसका अधिकार हो सकता है! क्योंकि बाप ने आपको सफलता भव का ..... दिया है।(4)
24. ऐसे प्लैन बनाओ जो सांप भी मरे और लाठी भी नहीं टूटे। प्रत्यक्षता हो, धमाल नहीं हो, ..... हो।(3)
25. वास्तव में ..... का एक-एक संकल्प, एक-एक सेकण्ड सफल करना ही सफलता मूर्त बनना है।(5)

### 23/24- पहेली का उत्तर (अव्यक्त मुरली 15-12-2002)

ऊपर से नीचे: 1.लवलीन, 2.वचन, 3.सेकण्ड, 4.मोहब्बत, 5.रात, 9.नेचर, 10.भावना, 11.भगवान, 13.परमात्मा, 14.वारिस, 16.मधुबन, 19.माइक, 21.साथ। बायें से दायें: 1.लगाव, 3.सेवा, 6.चमक, 7.मेहनत, 8.नशे, 10.भारत, 12.योग, 13.परिवार, 15.नाम, 17.दिन, 18.समान, 20.बच्चे, 22.कुम्भकरण, 23.अथक।